धूमलि : लोकतंत्र से कविता का सरोकार

* मणिकान्त पाण्डेय

'लोकतंत्र' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'डेमोक्रेसी' (Democracy) शब्द का हिंदी रूपान्तरण है। 'डेमोक्रेसी' शब्द यूनानी भाषा के दो शब्दों – 'डेमोस' और क्रेटिया' के योग से बना है। 'डेमोस' का अर्थ है – जनता तथा 'क्रेटिया' का अर्थ हैं 'शासन करना'। अतः डेमोक्रेसी का शाब्दिक अर्थ हुआ जनता का शासन। 'लोकतंत्र' को प्रायः हिन्दी में 'जनतंत्र', प्रजातंत्र आदि नामो से जाना जाता है।

लोकतंत्र की कोई निश्चित परिभाषा नहीं दी जा सकती फिर भी कुछ महत्वपूर्ण पाश्चात्य और भारतीय चिन्तको ने लोकतंत्र को परिभाषित किया है जो निम्नवत है–

- **अब्राहम लिंकन के अनुसार** – ''लोकतंत्र जनता का, जनता द्वारा, जनता के लिए शासन है।''
- **सीले के अनुसार** – ''लोकतंत्र वह शासन है जिसमें हर व्यक्ति भाग लेता है''
- **महात्मा गाँधी के अनुसार** – ''छोटे ग्राम समुदायों पर आधारित राज्य व्यवस्था ही सच्चा लोकतंत्र है। लोकतंत्र इस मौलिक तथ्य पर आधारित है कि व्यक्ति अपने व्यक्तिगत एंव सामाजिक कार्यो को नियंत्रित करने योग्य है और जनशक्ति ही राजनैतिक शक्ति का आधार है।''
- **पं0 जवाहर लाल नेहरू के अनुसार** – ''प्रजातंत्र सरकार का एक सच्चा चुनाव नहीं है, प्रजातंत्र समाज को उच्चतर मानवीय मूल्य भी प्रदान करता है..... यह राजनीतिक सत्ता के ऊपर अनुशासन का अंकुश लगाता है तथा उसे आत्मानुशासन में परिवर्तित भी करता है।''

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में भारत को प्रभुत्वसंपन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, अखण्डता, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए

* एम0फिल्, नेट,/जे0आर0एफ0, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ

सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, न्याय, विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा, राष्ट्र की एकता और अखण्डता' सुनिश्चित करने वाली वन्धुता पर जोर दिया गया है लेकिन अगर हम लोकतंत्र की कामयाबी की बात करे तो सफलता (आशा) की तुलना में निराशा ज्यादा हुई है। क्योकि अभी तक भारत में राष्ट्रीय एकता भी स्थायी नही हों पायी है तथा राजनीतिक प्रणाली समस्त समूहों, श्रेणियों एवं वर्गों की अपेक्षाओं को पूर्ण करने में असफल रही है।

देश की आजादी के बाद सच्चे लोकतंत्र की आवाज़ साहित्य में अगर किसी ने पहचाना तो नागार्जुन, धूमिल, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन, रघुपति सहाय तथा सर्वेश्वर दयाल सक्सेना इत्यादि हैं। जिसमें सबसे तीखी और प्रखर आवाज़ धूमिल की है। धूमिल की कविता की दुनिया अपने गांव खेवली में शुरू होती है और अपने समय के इतिहास, तमाम तरह की जागरूकताओं, क्रोधों प्रजातंत्र की हास्यास्पदता की छूटी हुई, धक्का देती हुई समकालीन साहित्य बोध और समकालीन साहित्यकारों तक जाती है। **''रोटी और संसद''**– कविता में वे मिडिल मैन, बिचौलिए या दलाल को पहचानने का अभ्यास करते है शायद पहली बार धूमिल ने शोषण और शोषित का आमना सामना दायें बाये करते हुए उस चोर को पकड़ने की कोशिश की है। जो तीसरा आदमी चोर, दलाल, विचौलिया और मध्यस्थ है –

एक आदमी
रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जों न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ रेाटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ –

''यह तीसरा आदमी कौन है ?''
मेरे देश की संसद मौन है।

धूमिल मौन संसद की आवाज है। उनकी बात प्रायः वहा से शुरू होती है जहा पहुँचकर लोकतंत्र निष्फल है। कई बार उनकी उक्तियों में इतना गुस्सा होता है कि वे तानाशाह अंदाज, में अपना वक्तव्य देने लगते है। धूमिल– 'कविता की भाषा को वाणी की आँख' कहते है। उनके बिम्ब, प्रतीक भी विचित्र दर्शन से जुड़े होते है। धूमिल कहते है कि हमारे ऊपर जो लोकतंत्र का आवरण डाल दिया गया है वो असल में एक थोथी नैतिकता है। हमें अपने अधिकार और सम्मान के लिए अगर नंगा होना पड़े तो वो भी करने से पीछे नहीं हटना चाहिए –

नंगापन
अंधापन होने के खिलाफ
एक सख्त कार्यवाही है।

धूमिल समाज में व्याप्त विसंगतियों को अपनी खुली आँखों से देख रहे थे जिसे तत्कालीन भारतीय समाज आँख और कान होते हुए भी अनदेखा और अनसुना बल्कि उस मूक पशु के समान अपनी किस्मत पर रो रहा था। धूमिल कहते है कि अपनी किस्मत को दोष देने से अच्छा है कि उसका विरोध करों और अपने भाग्य का निर्माण स्वंय करो। इन तमाम विसंगतियों को देखकर धूमिल अपने अन्दर की बेचैनी को अपनी एक कविता में उतारते है–

अब उसें मालूम है कि कविता
धेराव में
किसी बौखलए हुए आदमी का
संक्षिप्त एकालाप है।

जाहिर है, उनमें वर्चना को नियति मान लेने के बजाय उस पर सवाल उठाने का साहस था। जिससे आगे वे व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह तक भी गए –

क्रांति,
यहाँ के असभ्य लोगों के लिए
किसी अबोध बच्चे के
हाथों की जूती है।

धूमिल कहते है कि हमने एक ऐसे लोकतंत्र का निर्माण कर दिया है जिसकी हजारो बार निर्मम तरीके से हत्याएं होती है। जो न ही समाज में समानता ला सकता है और न ही पूरी मानव जाति के अधिकारों का संरक्षण ही कर सकता है, यह कैसा लोकतंत्र है। धूमिल इस लोकतंत्र पर बहुत बड़ा प्रश्न चिन्ह खड़ा करते है। –

यह जनतंत्र
जिसकी रोज सैकड़ो बार हत्या होती है
और हर बार
वह भेड़िया की जुबान पर ज़िंदा है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं, आदमी मूलतः लोकतांत्रिक प्राणी नही है लेकिन लोकतंत्र को जन्म उसी ने दिया है ताकि वह शांति से जी सके। दरअसल आज प्रदूषित माहौल मे अन्ना आंदोलन एक नई उम्मीद की किरण लेकर उभरा जिसे हर आम हिन्दुस्तानी ने अपना समर्थन देकर मजबूती प्रदान की, जो इस देश की शासन व्यस्था में कैंसर की तरह फैल चुके भष्टाचार, अनाचार, दुराचार, अत्याचार और काफी हद तक व्यभिचार से त्रस्त हों, उससे लड़ने की उससे मुक्त होनें की छटपटाहट रखता है। वैसी ही बेचैनी हमें आज से तीस–चालीस वर्ष पूर्व धूमिल के काव्य में देखने को मिल सकती है। जब वह कहते है–

''अपनें यहां संसद
तेली की वह धानी हैं
जिसमें आधा तेल है
आधा पानी है।''

आज का मनुष्य पहचान की स्वतंत्र चेतना के दौर से गुजर रहा है

यहां पर मनुष्य धर्मवाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद आदि अनेक बन्धनों में इस कदर बांध दिया गया है कि जैसे उसका स्वंय का कोई अस्तित्व ही न हो। ''जीने का अधिकार'' सभी मौलिक अधिकारों की जननी है, और निजता का अधिकार जीने के अधिकारों की जननी है और निजता का अधिकार जीने के अधिकार का महत्वपूर्ण अधिकार है। धूमिल कहते है कि ऐसे लोकतंत्र के विरूद्ध हर इंसान को अपनी आवाज़ उठानी चाहिए जिससें उनके विचारों और उनकी अभिव्यक्ति का दमन हो रहा है। धूमिल की ये भावना ऐसी ही एक कविता '**प्रजातंत्र के विरूद्ध**' की कुछ पंक्तियों में दिखायी पड़ती हैं।

और उस आततायी की तलाश करों हाय, हाय
इस बच्चे के पिता इस औरत के पति की तलाश करो
यही कहीं
हॉ–हॉ यही कहीं होगा
किसी बद्दू मुहावरे की आड़ में
खुदकुशी की रस्सी लटकता हुआ
पेट से लड़ते – लडते जिसका हाथ
अपने प्रजातंत्र पर उठ गया है।

भारत में महिलाए शोषित और वंचित है उनके प्रति सदियों पुरानी भेदभावपूर्ण भारतीय मानसिकता ही ऐसी है कि महिलाओं से जुडे मुद्दे यहां हमेशा जनमानस को उद्वेलित नही करते लेकिन धूमिल को महिलाओं के प्रति हों रहें शोषण ने उन्हें शर्मसार कर दिया। जिसकी पूरी अभिव्यक्ति धूमिल की एक कविता 'एकान्त कथा' में दिखायी पड़ती है–

बलात्कार के वाद की आत्मीयता
मुझें शोक से भर गई हैं
मेरी शालीनता – मेरी जरूरत है
जो अकसर मुझे नंगा कर गई है।

देश की आर्थिक व्यवस्था चंद लोगों के लाभ के किए मुनाफे पर

आधारित पूंजीवादी व्यवस्था है। देश का संविधान, जिससे संसद संचालित है, भी तत्वतः पूंजीवादी है। राजनेताओं द्वारा हर काम को स्वंय के लाभ–हानि की कसौटी पर परखा जाता है, लोगों के हित की बात बाद में आती है। तब इस पूंजीवादी लोकतंत्र का कोई कार्यक्रम समावेशी हों सकता है क्या ?ऐसी ही अनुगूँज हमें धूमिल की एक छोटी कविता **'लोहे का स्वाद'** में चरितार्थ है–

लोहे का स्वाद
लोहार से मत पूछो
उस घोड़े से पूछों
जिसके मुह में लगाम है।

अगर आपको सच्चे लोकतंत्र की मिट्टी की गंध सूंघनी होगी। परफ्यूम की सुगन्ध से देश में खुशबू नही फैलती है सूखी मिट्टी पर पानी की एक बूंद भी सोंधी–सुगन्ध छोड़ती है। उस सुगन्ध को पहचानना होगा। जनता का पसीना वह बूंद है। अगर पसीने की उपेक्षा की गई तो लोगों के सीने मे जो आग है वह लपट बनकर उठेगी। सोच बदलना होगा और आचरण बदलना होगा, तब सत्ता जन की लगेगी। समय आ गया है कि पिछली सदी से आगे बढ़कर व्यापक वैचारिक आधार, जो मुख्यतः उदारवादी, मानवतावादी और लोकतांत्रिक सोच पर आधारित हो, जिसमें सत्ता को नियंत्रण पर होड़ न हो, एक ऐसा आन्दोलन खड़ा करना होगा जो पूरी तरह से लोकतांत्रिक हो।

अन्ततः हम यह कह सकते है कि धूमिल की लोकतांत्रिक मूल्यों की कविता जितनी 20वी शताब्दी में सार्थक थी उससे कही बढ़कर 21वी शताब्दी में उसकी सार्थकता और अधिक तीव्र तथा प्रखर दिखायी पड़ती है। धूमिल जी का मानना है कि भ्रष्टाचार केवल पैसों का नही होता, आचरण का भी होता है। आचरण शुद्धि अभियान के लिए अब जनता को ही आगे आना होगा, तब लोकतंत्र सचमुच लोकतंत्र होगा। हमें निश्चत करना होगा कि वर्तमान स्थिति को बदलना है और उसके लिए किसी पार्टी या नेता पर

निर्भर नहीं रहेंगे। हम पूरी तरह सामूहिक शक्ति और सामूहिक विचार पर भरोसा रखेंगे। सामूहिक शक्ति के गठन के लिए हम व्याप्त सारे बन्धनों को काट फेंकेगे। हम निश्चित करेंगे कि हमारे आर्थिक सामाजिक अधिकार क्या होगें ?किसानो के लिए पानी–बिजली, भोजन, वस्त्र आवास, शिक्षा और चिकित्सा कैसे उपलब्ध कराए जाएंगे। तभी सच्चे लोकतंत्र की स्थापना होगी।

सन्दर्भ –

1. भारत में लोकतंत्र – एन0सी0आर0टी0 कक्षा 12
2. लोकतंत्र की चुनैतियाँ – सच्चिदानन्द सिन्हा वाणी प्रकाशन दिल्ली 2005
3. जन और जनतंत्र – (सं0) रमेश उपाध्याय, संज्ञा उपाध्याय शब्दसंधान नई दिल्ली, प्रथम संस्मरण 2006
4. लोकतंत्र मे तलबगार – जावेद आलम (अनुवाद) अभय कुमार दुबे वाणी प्रकाशन 2007
5. लोकतंत्र में सात अध्याय – अभय कुमार दुबे वाणी प्रकाशन 2007
6. धूमिल की कविताएँ – डॉ0 शुकदेव सिंह वाराणसी एलक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा0 लि0 चौक, वाराणसी – 221001
7. संसद से सड़क तक – धूमिल 1972 राजकमल प्रा0 लि0 1–वी नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज नई दिल्ली 110002
8. धूमिल की श्रेष्ठ कविताए – डॉ0 शिवकुमार मिश्र, लोकभारती प्रकाशन पहली मंजील, दरबारी विल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद – 211001
9. सुदामा पाण्डेय प्रजातंत्र – 'धूमिल' 2007